وَلَا تُجَادِلُوٓا أَهْلَ الْكِتٰبِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوٓا اٰمَنَّا بِالَّذِيٓ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلٰهُنَا وَإِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿46﴾

४६. और अहले किताब के साथ बहुत अच्छे तरीक़े से वाद-विवाद करो,[1] सिवाय उन के साथ जो उन में ज़ालिम हैं। और साफ़ एलान कर दो कि हमारा तो उस किताब पर भी ईमान है, जो हम पर नाज़िल की गयी है और उस पर भी जो तुम पर नाज़िल की गयी। हमारा-तुम्हारा रब एक ही है, हम सब उसी के फ़रमांबरदार हैं।

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ فَالَّذِينَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُونَ بِهٖ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهٖ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ إِلَّا الْكٰفِرُونَ ﴿47﴾

४७. और हम ने उसी तरह आप की तरफ़ अपनी किताब नाज़िल की है, इसलिए जिन्हें हम ने किताब अता की है, वे उस पर ईमान लाते हैं[2] और उन में से कुछ उस पर ईमान रखते हैं, और हमारी आयतों का इंकार केवल काफ़िर ही करते हैं।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِينِكَ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿48﴾

४८. और इस से पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे, और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह असत्य (बातिल) के पुजारी लोग शक और शुब्हे में पड़ते।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌ بَيِّنٰتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ إِلَّا الظّٰلِمُونَ ﴿49﴾

४९. वरन् यह (क़ुरआन) तो रौशन आयतें (सूत्र) हैं जो आलिमों (ज्ञानियों) के दिल में महफ़ूज़ हैं।[3] हमारी आयतों का इंकार करने वाला सिवाय ज़ालिमों के कोई दूसरा नहीं।

وَقَالُوا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ قُلْ إِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَإِنَّمَآ أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿50﴾

५०. और उन्होंने कहा कि इस पर कुछ निशानियाँ इसके रब की तरफ़ से क्यों नहीं उतारी गयीं। (आप) कह दीजिए निशानियाँ तो सभी अल्लाह के पास हैं मेरी हैसियत तो केवल वाज़ेह तौर से सचेत (आगाह) कर देने वाले की है।

[1] इसलिए कि वे आलिम और अक़्लमंद हैं, बात को समझने की योग्यता और क्षमता (सलाहियत) रखते हैं, इस वजह से उन से बहस और बातचीत में सख़्ती और तेज़ी मुनासिब (उचित) नहीं।

[2] इस से मुराद अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि (वग़ैरह) हैं। किताब देने से मुराद है उस के अनुसार अमल करना, जैसाकि उसके अनुसार जो अमल नहीं करते, उन्हें यह किताब दी ही नहीं गयी।

[3] यानी क़ुरआन मजीद के हाफ़िज़ों (ग़ैब याद करने वालों) के दिल में, यह क़ुरआन का मोजिज़ा है कि क़ुरआन मजीद हर्फ़-हर्फ़ दिल में महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो जाता है।

اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (51)

५१. क्या उन्हें यह काफी नहीं कि हम ने आप पर अपनी किताब नाज़िल कर दी जो उन पर पढ़ी जा रही है। इस में रहमत (भी) है और नसीहत (भी) है, उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (52)

५२. कह दीजिए कि मुझ में और तुम में अल्लाह तआला का गवाह होना काफी है, वह आकाश और धरती की हर चीजों का जानने वाला है, जो लोग असत्य (बातिल) को मानने वाले हैं और अल्लाह (तआला) से कुफ़्र करने वाले हैं, वे बहुत ज़्यादा नुक़सान में हैं।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (53)

५३. और ये लोग आप से अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं, अगर मेरी तरफ़ से मुकर्रर वक़्त न होता, तो अभी तक उन के पास अज़ाब आ चुका होता, यह तय बात है कि अचानक उनके अनजाने में उन के पास अज़ाब आ पहुँचेगा।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ (54)

५४. ये अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं और (इत्मिनान रखें) नरक काफ़िरों को घेर लेने वाला है।

يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (55)

५५. उस दिन उनके ऊपर-नीचे से उन्हें अज़ाब ढाँक रहा होगा और अल्लाह महान कहेगा कि अब अपने बुरे कामों का मज़ा चखो।

يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِىْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّاىَ فَاعْبُدُوْنِ (56)

५६. हे मेरे ईमानवाले बन्दो! मेरी धरती बहुत कुशादा है, तो तुम मेरी ही इबादत करो।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ (57)

५७. हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुम सब हमारी ही तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ (58)

५८. और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम भी किये उन्हें हम यकीनी तौर से जन्नत के उन ऊँचे मकानों में जगह देंगे जिनके नीचे से नदियाँ बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। (अच्छे) काम करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ (59)

५९. वे जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

وَكَأَيِّن مِّن دَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (60)

६०. और बहुत से जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ लादे नहीं फिरते, उन सब को और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रिज़्क़ अता करता है। वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ (61)

६१. और अगर आप उनसे पूछें कि धरती और आकाश का ख़ालिक़ और सूरज और चाँद को काम में लगाने वाला कौन है तो उन का जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला,[1] तो फिर किधर उल्टे जा रहे हैं।

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (62)

६२. अल्लाह तआला अपने बंदों में से जिसे चाहे ज़्यादा रिज़्क़ (जीविका) अता करता है और जिसे चाहे कम, बेशक अल्लाह तआला हर चीज का जानने वाला है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّن نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ (63)

६३. और अगर आप उन से सवाल करें कि आकाश से पानी बरसा कर धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा करने वाला कौन है, तो बेशक उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला। आप कह दें कि सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए है, बल्कि उन में ज़्यादा लोग नाअक़्ल (निर्बोध) हैं।[2]

وَمَا هَٰذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهْوٌ وَلَعِبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ (64)

६४. और दुनिया की यह ज़िन्दगी तो सिर्फ़ मनोरंजन और खेल-कूद है, हाँ सच्ची ज़िन्दगी तो आख़िरत का घर है, अगर ये जानते होते।

---

[1] यानी ये मूर्तिपूजक मुसलमानों को सिर्फ़ एकेश्वरवाद (तौहीद) में यक़ीन करने के सबब तकलीफ़ें पहुँचा रहे हैं, उन से अगर पूछा जाये कि आकाश और धरती को नास्ति (अदम) से पैदा करने वाला और सूरज-चाँद को अपनी परिधि (दायरे) में चक्कर कराने वाला कौन है, तो वहाँ यह क़ुबूल करने के लिए मजबूर हैं कि ये सब कुछ करने वाला अल्लाह है।

[2] क्योंकि अक़्ल होती तो अपने रब के साथ पत्थरों को, मुर्दों को रब न बनाते, न उन के अन्दर यह सलाहियत होती कि अल्लाह तआला को ख़ालिक़ (स्रष्टा) और पैदा करने वाला और रब मानते हुए भी बुतों (मूर्तियों) को संकटहारी (मुश्किल कुशा) और पूज्य समझ रहे हैं।

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ (65)

६५. जब यह लोग नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह (तआला) को ही पुकारते हैं उस के लिए इबादत को ख़ास कर के, फिर जब वह उन्हें थल (ख़ुश्की) की तरफ़ महफ़ूज़ ले आता है तो उसी वक़्त शिर्क करने लगते हैं।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ وَلِيَتَمَتَّعُوا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ (66)

६६. ताकि हमारे अता किये हुए उपकारों (एहसानों) से मुकरते रहें और फ़ायेदामंद होते रहें। अभी-अभी उन्हें पता चल जायेगा।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا آمِنًا وَيُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۚ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ (67)

६७. क्या ये नहीं देखते कि हम ने हरम को अमन की जगह बना दिया, जब कि उन के क़रीबी इलाक़े से लोग अपहृत (उचक) कर लिये जाते हैं[1] क्या ये असत्य (बातिल) पर तो यक़ीन रखते हैं और अल्लाह (तआला) की नेमतों पर नाशुक्री करते हैं।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ (68)

६८. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठा बुहतान लगाये या जब हक़ उसके पास आ जाये, वह उसे झूठ बताये, क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक में न होगा?

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ (69)

६९. और जो लोग हमारे रास्ते में दुख सहन करते हैं, हम उन्हें अपना रास्ता ज़रूर दिखा देंगे। बेशक अल्लाह (तआला) नेकी करने वालों का साथी है।[2]

[1] अल्लाह तआला उस नेमत का बयान कर रहा है जो मक्कावासियों पर उसने किया है कि हम ने उन के हरम को शान्ति वाला बनाया है, जिस के रहने वाले क़त्ल और अपहरण, लूटमार वग़ैरह से महफ़ूज़ हैं, जबकि अरब के दूसरे इलाक़े इस तरह की शान्ति-सुरक्षा (अमन व अमान) से महरूम हैं। लूट और क़त्ल उन के यहाँ आम और हर दिन का काम है।

[2] एहसान से मुराद अल्लाह को शाहिद मानकर हर नेकी के काम साफ़ दिल के साथ करना, नबी ﷺ की सुन्नत के अनुसार करना, बुराई के बदले एहसान करना, अपना हक़ छोड़ कर दूसरों को उन के हक़ से ज़्यादा देना, यह सब एहसान के परिधि (दायरे) में शामिल हैं।

سُوْرَةُ الرُّوْمِ

सूरतुर्रूम-३०

सूर: रूम मक्का में नाज़िल हुई, इस में साठ आयतें और ६ रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الٓمّٓ ﴿1﴾

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿2﴾

२. रोमन पराजित (मग़लूब) हो गये।

فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿3﴾

३. क़रीबी धरती पर और वह पराजित होने के बाद क़रीब मुस्तक़बिल में ग़ालिब हो जायेंगे।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۗ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿4﴾

४. कुछ सालों में ही, इस से पहले और इस के बाद भी हक़ अल्लाह (तआला) ही का है, और उस दिन मुसलमान ख़ुश होंगे।

بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿5﴾

५. अल्लाह (तआला) की मदद से,[1] वह जिसकी चाहता है मदद करता है, और असल फ़ातेह और प्रभावशाली (ग़ालिब) और रहीम वही है।

وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿6﴾

६. अल्लाह का वादा है, अल्लाह (तआला) अपने वादे तोड़ा नहीं करता, लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

---

[1] रिसालत के ज़माने में दो बड़ी ताक़तें थीं, एक फ़ारस (ईरान) की और दूसरी रोम की। पहला बयान किया गया मुल्क अग्निपूजक और दूसरा ईसाई यानी अहले किताब था। मक्का के मूर्तिपूजकों की हमदर्दी ईरान के साथ थीं, क्योंकि दोनों अल्लाह के सिवाय दूसरों के पुजारी थे, जबकि मुसलमानों की हमदर्दी रोम के इसाई राज्य के साथ थीं, इसलिए कि इसाई भी मुसलमानों की तरह अहले किताब थे। वह्यी और रसूलों पर ईमान रखते थे, उनकी आपस में ठनी रहती थी। नबी ﷺ की नबूअत के एलान के कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि ईरान का राज्य (मुल्क) रोम के इसाई राज्य के ऊपर विजयी (फ़ातेह) हो गया, जिस पर मूर्तिपूजकों को ख़ुशी हुई और मुसलमानों को दुख हुआ, उस मौक़ा पर क़ुरआन की ये आयतें नाज़िल हुई, जिन में ये भविष्यवाणी (पेशीनगोई) की गयी कि कुछ साल के अन्दर रूमी दोबारा विजयी हो जायेंगे और विजयी पराजित और पराजित विजयी हो जायेंगे।

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿7﴾

७. वह तो (केवल) दुनियावी जिन्दगी के जाहिर को (ही) जानते हैं, और आख़िरत से तो बिल्कुल ही बेख़बर हैं।

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿8﴾

८. क्या उन लोगों ने अपने दिल में यह ग़ौर नही किया कि अल्लाह (तआला) ने आकाशों को और धरती और उनके बीच जो कुछ है सबको बेहतर अंदाज़ा से[1] मुक़र्रर वक़्त तक के लिए (ही) पैदा किया है, हाँ ज़्यादातर लोग बेशक अपने रब की मुलाक़ात का इंकार करते हैं।

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿9﴾

९. क्या उन्होंने धरती पर सैर करके नहीं देखा कि उनसे पहले के लोगों का परिणाम (अंजाम) कैसा (बुरा) हुआ? वे उन से ज़्यादा ताक़तवर (और बलवान) थे, और उन्होंने भी धरती जोती-बोयी थी और उन से ज़्यादा आबादी बनाई थी और उन के पास उन के रसूल मोजिज़े लेकर आये थे, यह तो नामुमकिन था कि अल्लाह (तआला) उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन (हक़ीक़त में) वे ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوا السُّوْۗآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿10﴾

१०. फिर आख़िर में बुरों का बुरा अंजाम हुआ, इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे और उनका मज़ाक़ उड़ाते थे।

[1] या एक मक़सद और सच के साथ पैदा किया है बेकार नही, और वह मक़सद यह है कि नेक लोगों को नेकियों का बदला और बुरे लोगों को उनकी बुराई की सज़ा दी जाये, यानी क्या वे अपने वजूद पर ख़्याल नहीं करते कि किस तरह उसे हक़ीर से बुलन्द किया और पानी की एक हक़ीर बूँद से उनकी तख़लीक़ (सृष्टि) की। फिर आकाश और धरती को एक ख़ास मक़सद के लिए लम्बा-चौड़ा किया, इसके अलावा उन सब के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया, यानी क़यामत का दिन जिस दिन ये सब कुछ ख़त्म हो जायेगा। मतलब यह है कि अगर वे इन सब बातों पर ख़्याल करते तो निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से अल्लाह के वजूद, उस के रब और लायक़े इबादत होने और उसकी क़ुदरत का उन्हें संवेदन (एहसास) और इल्म हो जाता और उस पर ईमान ले आते।

ٱللَّهُ يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (11)

११. अल्लाह (तआला) ही मख़लूक़ को पैदा करता है, फिर वही उन्हें दोबारा पैदा करेगा,[1] फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يُبْلِسُ ٱلْمُجْرِمُونَ (12)

१२. और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी तो मुजरिम हैरान रह जायेंगे।[2]

وَلَمْ يَكُن لَّهُم مِّن شُرَكَآئِهِمْ شُفَعَٰٓؤُا۟ وَكَانُوا۟ بِشُرَكَآئِهِمْ كَٰفِرِينَ (13)

१३. और उन के सभी साझीदारों में से एक भी उन की सिफ़ारिश नहीं करेगा[3] और ख़ुद ये भी अपने देवताओं (शरीकों) का इंकार करेंगे।

وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَتَفَرَّقُونَ (14)

१४. और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, उस दिन (सभी गुट) बँट जायेंगे।[4]

فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَهُمْ فِى رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ (15)

१५. फिर जो ईमान लाकर नेक काम करते रहे, वे तो जन्नत में ख़ुश कर दिये जायेंगे।

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا وَلِقَآئِ ٱلْءَاخِرَةِ فَأُو۟لَٰٓئِكَ فِى ٱلْعَذَابِ مُحْضَرُونَ (16)

१६. और जिन्होंने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत के मिलन को झूठा ठहराया था, वे सब अज़ाब में पकड़ कर हाज़िर किये जायेंगे।

---

[1] जिस तरह अल्लाह तआला पहली बार पैदा करने की क़ुदरत रखता है, उसी तरह मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है, इसलिए कि दोबारा ज़िन्दा करना पहली बार पैदा करने से ज़्यादा कठिन नहीं।

[2] إبلاس का मतलब है अपने हक़ की तसदीक़ के लिए कोई दलील पेश न कर सकना और हैरान होकर चुप खड़े रहना, और مُبْلِس वह होगा जो मायूस होकर चुप खड़ा हो और उसे कोई दलील समझ में न आ रही हो।

[3] साझीदारों से मुराद वे झूठे देवता हैं, जिन्हें मूर्तिपूजक यह समझकर पूजते थे कि यह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे और उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचा लेंगे, लेकिन यहाँ अल्लाह ने वाज़ेह कर दिया कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाने वालों के लिए अल्लाह के यहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा।

[4] इस से मुराद हर एक इंसान का हर एक इंसान से अलग होना नहीं है बल्कि मतलब ईमानवालों का काफ़िरों से अलग होना है। ईमानवाले जन्नत में और काफ़िर और मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे और उन के बीच स्थाई (मुस्तक़िल) अलगाव हो जायेगी और ये दोनों फिर कभी भी जमा न होंगे, यह हिसाब के बाद होगा, इस अलगाव की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) अगली आयत में आ रहा है।

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ⑰

१७. तो अल्लाह (तआला) की तारीफ़ किया करो, जबकि तुम शाम करो और जब सुबह करो।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ⑱

१८. और सभी तारीफ़ों के लायक़ आकाश और धरती में वही है, तीसरे पहर और दोपहर के समय भी उसकी पकीज़गी को बयान करो।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ⑲

१९. वही ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है,[1] और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है, और वही धरती को उस की मौत के बाद ज़िन्दा करता है, इसी तरह तुम (भी) निकाले जाओगे।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ⑳

२०. और अल्लाह की निशानियों में से है कि तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर अब इंसान बनकर (चलते-फिरते) फैल रहे हो।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ㉑

२१. और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा कीं[2] ताकि तुम उन से सुख पाओ,[3] उस ने तुम्हारे बीच प्रेम और दया भाव पैदा कर दिये,[4] बेशक ग़ौर व फ़िक्र करने वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

---

[1] जैसे मुर्गी को अंडे से, अंडे को मुर्गी से, इंसान को वीर्य (मनी) से, वीर्य को इंसान से और ईमान वाले को काफ़िर से, काफ़िर को ईमानवालों से पैदा करता है।

[2] यानी तुम्हारे ही लिंग (जाति) से औरतें पैदा कीं ताकि वे तुम्हारी बीवियाँ हों और तुम जोड़ा-जोड़ा हो जाओ, زَوْج अरबी भाषा में जोड़ा को कहते हैं। इस बिना पर मर्द, औरत के लिए और औरत, मर्द के लिए जोड़ा है, औरतों के मानव (इंसानी) लिंग होने का मतलब है कि दुनिया की पहली औरत हज़रत हव्वा को हज़रत आदम की बायें पहलू से पैदा किया गया, फिर उन दोनों से इंसानों का ख़ानदान चला।

[3] मतलब यह है कि अगर मर्द और औरत की जाति एक-दूसरे से अलग होती, मिसाल के तौर पर औरतें जिन्नात या जानवरों में से होतीं तो उन से वह सुकून कभी हासिल न होता जो इस समय दोनों के एक ही जाति होने की वजह से होता है बल्कि एक-दूसरे से नफ़रत और डर होता, यह अल्लाह तआला की रहमत ही है कि इंसान की बीवियाँ इंसानों में से ही बनायीं।

[4] مَوَدَّة यह है कि पति, पत्नी से बहुत मुहब्बत करता है और ऐसे ही पत्नी, पति से। जैसाकि आम तौर से देखने में आया है, ऐसी मुहब्बत जो पति-पत्नी में होती है, दुनिया में किसी दो इंसानों के बीच नहीं होती।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلْعٰلِمِیْنَ ﴿22﴾

२२. और उस की (क़ुदरत) की निशानियों में से आकाशों और धरती की पैदाइश और तुम्हारी ज़ुबानों और रंगो का इख़्तिलाफ़ (भी) है[1] अक़्लमंदों के लिए अवश्य (यक़ीनन) उस में बड़ी निशानियाँ हैं।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ﴿23﴾

२३. और (दूसरे भी) उसकी (क़ुदरत) की निशानियाँ तुम्हारे रात और दिन की नींद में है और उसका फ़ज़्ल (यानी रोज़ी) को तुम्हारा खोजना (भी) है, जो लोग कान लगाकर सुनने वाले हैं उन के लिए इसमें बड़ी निशानियाँ हैं।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖ یُرِیْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّیُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَیُحْیٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿24﴾

२४. और उसकी निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि वह तुम्हें डराने और उम्मीद वाला बनाने के लिए तड़ित (बिजलियाँ) दिखाता है, और आकाश से बारिश करता है, और उस से मुर्दा धरती ज़िंदा करता है, इस में (भी) अक़्लमंदों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ۖۗ مِّنَ الْاَرْضِ ۖۗ اِذَاۤ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿25﴾

२५. और उसकी एक निशानी यह भी है कि आकाश और धरती उस के हुक्म से क़ायेम हैं, फिर वह जब तुम्हें आवाज़ देगा, केवल एक बार की आवाज से ही तुम सब धरती से निकल आओगे।

[1] दुनिया में इतनी ज़ुबानो का पाया जाना भी अल्लाह तआला की क़ुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है: अरबी है, तुर्की है, अंग्रेज़ी है, उर्दू है, हिन्दी है, पश्तो, फ़ारसी, सिन्धी, बलूची, तमिल, तेलगू और बंगला वग़ैरह हैं। फिर एक-एक ज़ुबान की आवाज़ और शैलियाँ हैं। एक इंसान अपनी ज़ुबान और उच्चारण (लहजे) के सबब लाखों की भीड़ में पहचान लिया जाता है कि फ़्लाँ देश के फ़्लाँ इलाक़े का रहने वाला है, सिर्फ़ ज़ुबान ही उसकी पूरी तारीफ़ करा देती है। इसी तरह एक ही माता-पिता (आदम और हव्वा) से होने के बावजूद भी रंग एक-दूसरे से अलग हैं, कोई काला है, कोई गोरा है तो कोई गेहुँआ रंग का, फिर काले और गोरे रंग में भी इतने दर्जे हैं कि ज़्यादातर आबादी दो रंगों में बटने के बावजूद भी उन की कई क़िस्में हैं, और एक-दूसरे से पूरी तरह से अलग-अलग। फिर उन के मुँह की बनावट, शारीरिक रचना (जिस्मानी रूप) और ढाँचे में ऐसा फ़र्क़ रख दिया गया है कि एक-एक देश का इंसान अलग से पहचान लिया जाता है।

وَلَهُۥ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ كُلٌّ لَّهُۥ قَٰنِتُونَ (26)

२६. और आकाश और धरती की सारी चीज़ों का वही मालिक है और हर एक उस के हुक्म के ताबेह (अधीन) हैं।

وَهُوَ ٱلَّذِى يَبْدَؤُا۟ ٱلْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُۥ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ ٱلْمَثَلُ ٱلْأَعْلَىٰ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَهُوَ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ (27)

२७. और वही है जो पहली बार सृष्टि (मख़लूक़) को पैदा करता है, वही फिर से दोबारा पैदा करेगा और यह तो उस पर बहुत आसान है, उसी की अच्छी और उच्च विशेषता (सिफ़त) है[1] आकाशों में और धरती में भी, वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ ۖ هَل لَّكُم مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُكُم مِّن شُرَكَآءَ فِى مَا رَزَقْنَٰكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ سَوَآءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ ٱلْءَايَٰتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ (28)

२८. अल्लाह तआला ने एक मिसाल ख़ुद तुम्हारी ही बयान की, जो कुछ हम ने तुम्हें अता कर रखा है क्या उस में तुम्हारे दासों (ग़ुलामों) में से कोई तुम्हारा साझीदार है कि तुम और वह इस में बराबर पद के हो ?[2] और तुम उनका डर इस तरह रखते हो जैसे कि ख़ुद अपनों का, हम अक़्लमंदों के लिए इसी तरह वाज़ेह तौर (स्पष्ट रूप) से आयतें बयान करते हैं।

---

[1] यानी इतने गुणों (सिफ़त) और महान सामर्थ्य (अज़ीम क़ुदरत) का मालिक, तमाम तुलनाओं (तश्बीहों) से महान (बेनियाज़) और ऊँचा है।

«لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ»

"उसकी कोई तुलना नहीं।" (सूर: शूरा-११)

[2] यानी जब तुम को यह प्यारा नहीं कि तुम्हारे दास और काम करने वाले जो तुम्हारे ही तरह इंसान हैं, वे तुम्हारे धन-दौलत के साझीदार और तुम्हारे बराबर हो जायें, तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि अल्लाह के दास (भक्त), चाहे वे फ़रिश्ते हों, रसूल हों, वली, हों या पेड़ और पत्थर के बनाये हुए देवता, वे अल्लाह के साझीदार हो जायें, जबकि वे भी अल्लाह के दास हैं और उसकी मख़लूक़ हैं, यानी जिस तरह पहली बात नहीं हो सकती दूसरी भी नहीं हो सकती, इसलिए अल्लाह के साथ दूसरों की भी इबादत करना और उन्हें भी कष्टनिवारक (मुश्किलकुशा) और संकट-मोचन (फ़रियाद सुनने वाला) समझना हमेशा ग़लत है।

बَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (29)

२९. सहीह बात यह है कि ये जालिम बिना इल्म के ख़्वाहिशात के पुजारी हैं उसे कौन रास्ता दिखाये जिसे अल्लाह रास्ते से हटा दे?[1] उनकी एक भी मदद करने वाला नहीं।

فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (30)

३०. तो आप एकाग्र (एकसू) होकर अपना मुंह दीन की तरफ़ केन्द्रित (मरकूज़) कर दें, अल्लाह (तआला) की वह फ़ितरत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह तआला के बनाये को बदलना नहीं, यही सच्चा दीन है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं समझते।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (31)

३१. (लोगो!) अल्लाह (तआला) की तरफ़ आकर्षित होकर उससे डरते रहो और नमाज़ को क़ायम रखो और मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ (32)

३२. उन लोगों में से जिन्होंने अपने दीन को छिन्न-भिन्न कर दिया और ख़ुद भी गुटों में बंट गये, हर गुट उस चीज़ पर जो उसके पास है मगन है।[2]

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ (33)

३३. और लोगों को जब कोई दुख पहुंचता है तो अपने रब की तरफ़ यक्सू होकर दुआयें करते हैं और जब वह अपनी तरफ़ से रहमत का मज़ा चखा देता है, तो उन में का एक गुट अपने रब के साथ शिर्क करने लगता है।

---

[1] क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से हिदायत उसे ही मिलती है, जिसके अन्दर हिदायत हासिल करने की इच्छा और कामना (ख़्वाहिश) होती है, जो इस इच्छा से महरूम होते हैं उन्हें गुमराही में भटकते छोड़ दिया जाता है।

[2] यानी हर गुट और गिरोह यह समझता है कि वह सच पर है और दूसरे झूठे, और जो सहारे उन्होंने खोज रखे हैं, जिन को वे दलील और सुबूत कहते है उन पर ख़ुश और मगन हैं। बदनसीबी से इस्लामी उम्मत का भी यही हाल हुआ कि वह भी कई गुटों में बंट गई और उनका भी हर गुट इसी झूठे ईमान पर मज़बूत है कि वह सच पर है, जबकि सच पर केवल एक ही गुट है, जिसकी पहचान नबी ﷺ ने बतायी है कि मेरे और मेरे सहाबा के रास्ता पर चलने वाला होगा।

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۚ فَتَمَتَّعُوا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ (34)

३४. ताकि वे उस चीज की नाशुक्री जाहिर करें जो हम ने उन्हें अता की है, अच्छा, तुम फ़ायेदा उठा लो, बहुत जल्दी तुम्हें मालूम हो जायेगा।

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ (35)

३५. क्या हम ने उन पर कोई प्रमाण (सबूत) नाजिल किया है, जो उसे बयान करता है जिसे ये अल्लाह के साथ साझीदार बना रहे हैं।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ (36)

३६. और जब हम लोगों को रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वे बहुत ख़ुश हो जाते हैं, और अगर उन्हें अपने हाथों के करतूत के सबब कोई दुख पहुँचे तो अचानक वे मायूस हो जाते हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (37)

३७. क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे बहुत रिज़्क़ देता है और जिसे चाहे कम, इस में भी उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, निशानियाँ हैं।

فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (38)

३८. तो क़रीबी रिश्तेदार को, ग़रीब को, मुसाफ़िर को, हर एक को उसका हक़ दो, यह उन के लिए बेहतर है,जो अल्लाह (तआला) के मुँह की ज़ियारत (दर्शन) करना चाहते हों, ऐसे ही लोग नजात हासिल करने वाले हैं।

وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ (39)

३९. और तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे, वह अल्लाह (तआला) के यहाँ नहीं बढ़ता[1] और जो कुछ (सदक़ा और) ज़कात तुम अल्लाह (तआला) के मुँह देखने

---

[1] यानी ब्याज से खुले तौर से बढ़ोत्तरी तो दिखायी देती है लेकिन हक़ीक़त में ऐसा नहीं होता, बल्कि उसकी बदनसीबी आख़िर में इस दुनिया और आख़िरत में तबाही का सबब है। हज़रत इब्ने अब्बास और कई सहाबा और ताबईन ने इस आयत में ربا से मुराद ब्याज नहीं बल्कि वह उपहार (तोहफ़ा) लिया है जो कोई ग़रीब किसी धनवान को या जनता का कोई इंसान राजा या राजा के अधिकारी (मुलाज़िम) को या एक सेवक अपने मालिक को इस इरादे से देता है कि वह उस के बदले में उस से ज़्यादा देगा, उसे ربا इसलिए कहा गया है कि देते समय ज़्यादती का ध्यान होता है। यह अगरचे ठीक है फिर भी अल्लाह के यहाँ इसका बदला नहीं मिलेगा, "فلا يربو عند الله" से उसी आख़िरत के बदले का खण्डन (तरदीद) होता है। इस बिना पर तर्जुमा होगा "जो तुम तोहफ़ा दो इस इरादे से कि वापसी की हालत में ज़्यादा मिले तो अल्लाह के यहाँ उसका अज्र नहीं।" (इब्ने कसीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

(रिज़ा) के लिए दो, तो ऐसे ही लोग हैं अपना बढ़ाने वाले।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ سُبْحٰنَهُ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ (40)

४०. अल्लाह (तआला) वह है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर रिज़्क़ दिया, फिर मार डालेगा, दोबारा ज़िन्दा कर देगा, बताओ! तुम्हारे साझीदारों में से कोई भी ऐसा है जो इन में से कुछ भी कर सकता हो। अल्लाह (तआला) के लिए पाकीज़गी और फ़ज़ीलत (विशेषता) है हर उस साझीदार से जो यह लोग गढ़ते हैं।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (41)

४१. जल-थल में लोगों के कुकर्मों (बुरे कामों) के सबब फ़साद फैल गया, इसलिए कि उन्हें उन के कुछ करतूतों का फल अल्लाह (तआला) चखा दे, (बहुत) मुमकिन है कि वह रूक जायें।[1]

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ (42)

४२. आप कह दीजिए, धरती में चल-फिर कर देखो तो सही कि पहले के लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन में ज़्यादातर लोग मूर्तिपूजक थे।[2]

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللّٰهِ ۖ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ (43)

४३. तो आप अपना मुंह उस सीधे और सच्चे दीन की तरफ़ ही रखें, पहले इस के कि वह दिन आ जाये जिसकी वापसी अल्लाह (तआला) की तरफ़ से है ही नहीं, उस दिन सब अलग-अलग हो जायेंगे।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ (44)

४४. कुफ़्र करने वालों पर उनका कुफ़्र होगा और नेक काम करने वाले अपने ही विश्रामगृह (आरामगाह) को सुन्दर (ख़ूबसूरत) बना रहे हैं।

---

[1] थल से मुराद इंसानी आबादियाँ और पानी से मुराद समुद्र और समुद्री रास्ते और समुद्र के किनारों की आबादियाँ हैं। फ़साद से मुराद हर वह फ़साद है जिस से इंसान के समाज और बस्तियों में अमनो अमान बरबाद और उन के सुख-चैन में रूकावट पैदा हो।

[2] शिर्क का ख़ास तौर से बयान किया गया है कि यह सब से बड़ा गुनाह है। इस के सिवाय इस में दूसरे गुनाह और ग़ल्तियाँ भी आ जाती हैं क्योंकि इनका इस्तेमाल भी इंसान अपनी ख़्वाहिशों की गुलामी को कुबूल करके ही करता है, इसीलिए कुछ लोग इसे अमली शिर्क कहते हैं।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿45﴾

४५. ताकि अल्लाह (तआला) अपने फ़ज़्ल (कृपा) से उन्हें फल दे, जो ईमान लाये और नेक काम किये, वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرَاتٍ
وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِأَمْرِهِ
وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿46﴾

४६. और उसकी निशानियों में ख़ुशख़बरी देने वाली हवाओं को चलाना भी है, इसलिए कि तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाये, और इसलिए कि उस के हुक्म से नावें चलें और इसलिए कि उस के फ़ज़्ल को तुम खोजो और इसलिए कि तुम शुक्रिया अदा करो।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَاءُوهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿47﴾

४७. और हम ने आप से पहले भी (अपने) रसूलों को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा वे उन के पास प्रमाण (दलायेल) लाये, फिर हम ने पापियों से बदला लिया। हम पर ईमानवालों की मदद फ़र्ज़ है।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ
فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى
الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۖ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿48﴾

४८. वह अल्लाह (तआला) है जो हवायें चलाता है, वे बादलों को उठाती हैं फिर अल्लाह (तआला) अपनी मर्ज़ी से उसे आसमान में फैला देता है, और उस के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर आप देखते हैं कि उस के अंदर से बूंदें निकलती हैं,[1] और जिन्हें अल्लाह चाहता है उन बंदों पर वह बारिश करता है तो वे ख़ुश हो जाते हैं।

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ
لَمُبْلِسِينَ ﴿49﴾

४९. और यक़ीन (विश्वास) करना कि बारिश (वर्षा) उन पर बरसने से पहले तो वे मायूस हो रहे थे।

[1] وَدْق का मतलब बारिश है, यानी उन बादलों से अल्लाह अगर चाहता है तो बारिश हो जाती है, जिस से बारिश के चाहने वाले ख़ुश हो जाते हैं।

फَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (50)

५०. तो आप अल्लाह की रहमत के निशान देखें कि धरती की मौत के बाद किस तरह अल्लाह तआला उसे जिन्दा कर देता है। बेशक वही मुर्दों को जिन्दा करने वाला है,[1] और वह हर चीज पर क़ादिर है।

وَلَىِٕنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ (51)

५१. और अगर हम तेज हवा चला दें और ये लोग उन्हीं खेतियों को (मुरझायी हुई) पीली पड़ी देख लें, तो फिर उस के बाद कृतघ्नता (नाशुक्री) जाहिर करने लगें।

فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ (52)

५२. बेशक आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को (अपनी) आवाज सुना सकते हैं, जबकि वे पीठ फेरकर मुड़ गये हों।

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ (53)

५३. और न आप अंधों को उनकी गुमराही से मार्गदर्शन (हिदायत) देने वाले हैं। आप तो केवल उन्हीं लोगों को सुनाते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते है और हैं भी वे फ़रमांबरदार।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ۭ يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ (54)

५४. अल्लाह (तआला) वह है, जिस ने तुम्हें कमजोर हालत में पैदा किया,[2] फिर उस कमजोरी के बाद ताक़त अता (प्रदान) किया, फिर उस ताक़त के बाद कमजोरी और बुढ़ापा कर दिया,[3] जो चाहता है पैदा करता है, वह

---

[1] آثار رحمت से मुराद वे अनाज, पैदावार और मेवे हैं जो बारिश से पैदा होते हैं और सुख-सुविधा और खुशहाली के सबब होते हैं। देखने से मुराद नसीहत हासिल करने की नजर से देखना है ताकि इंसान अल्लाह की ताक़त और क़ुदरत और इस बात को क़ुबूल कर ले कि वह क़यामत के दिन उसी तरह मुर्दों को जिन्दा करेगा।

[2] यहाँ से अल्लाह (तआला) अपनी क़ुदरत का एक दूसरा मोजिज़ा बयान कर रहा है, और वह है कई तरीक़ों से इंसान की पैदाईश। निर्बल (कमजोरी की हालत) से मुराद वीर्य (मनी) यानी पानी की बूँद है या बचपन।

[3] कमजोरी से मुराद उम्र की वह हालत है जब दिमाग़ी और जिस्मानी कमजोरी की शुरूआत होती है और बुढ़ापे से मुराद उम्र की वह मुद्दत है जिस में कमजोरी बढ़ जाती है।

सभी को अच्छी तरह जानता और सभी पर पूरी क़ुदरत रखता है।

५५. और जिस दिन क़यामत आ जायेगी[1] पापी लोग क़सम खायेंगे कि (दुनिया में) एक पल के सिवाय नहीं ठहरे, इसी तरह ये बहके हुए ही रहे।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ ۙ مَا لَبِثُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَٰلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ (55)

५६. और जिन लोगों को इल्म और ईमान अता किया गया, वे जवाब देंगे कि तुम तो जैसाकि अल्लाह की किताब में है क़यामत (प्रलय) के दिन तक ठहरे रहे। आज का यह दिन क़यामत का ही दिन है, लेकिन तुम तो यक़ीन ही नहीं करते थे।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَىٰ يَوْمِ الْبَعْثِ ۖ فَهَٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (56)

५७. तो उस दिन ज़ालिमों को उनकी दलील कुछ काम न आयेगी और न उन से माफ़ी मँगवायी जायेगी न अमल मांगा जायेगा।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ (57)

५८. और बेशक हम ने इस क़ुरआन में लोगों के सामने सब मिसालें बयान की हैं। आप उन के पास कोई भी निशानी लायें, ये काफ़िर तो यही कहेंगे कि तुम (बकवासी) झूठे हो।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَٰذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ (58)

५९. अल्लाह (तआला) उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते, इसी तरह मोहर लगा देता है।

كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ (59)

६०. तो आप सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, आप को वे लोग हल्का (अधीर) न करें जो यक़ीन नहीं करते।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ (60)

---

[1] साअत का मतलब है घड़ी, पल (क्षण), मुराद क़यामत है, उसको पल इसलिए कहा गया है कि उसका घटित (वाक़ेअ) होना जब अल्लाह चाहेगा एक पल में हो जायेगा, या इसलिए कि यह उस पल में होगी जो दुनिया का आख़िरी पल होगा।

सूरतु लुकमान-३१

سُورَةُ لُقْمَانَ

सूरः लुकमान मक्का में नाज़िल हुई, इस में चौंतीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. यह हिक्मत (दिव्यज्ञान) वाली किताब की आयतें हैं।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿2﴾

३. जो परहेज़गारों के लिए हिदायत और (सर्वथा) रहमत हैं।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿3﴾

४. जो लोग पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात (धर्मदान) देते हैं और आख़िरत पर (पूरा) यक़ीन करते हैं।[1]

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿4﴾

५. यही लोग हैं जो अपने रब की तरफ़ से हिदायत पर हैं और यही लोग नजात हासिल करने वाले हैं।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿5﴾

६. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अनायास (लग़व) बातों को मोल लेते हैं कि अज्ञानता (जिहालत) के साथ लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटकायें और उसे मज़ाक़ बनायें,[2] यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित (ज़लील) करने वाला अज़ाब है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۚ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿6﴾

---

[1] नमाज़, ज़कात और परलोक (आख़िरत) पर ईमान, ये तीनों बहुत अहम हैं, इसलिए इनका ख़ास तौर से बयान किया, वर्ना नेक, सदाचारी और अल्लाह से डरने वाले सभी अनिवार्य आदेश (वाजिबात) और सुन्नत बल्कि नेक काम तक लगातार मज़बूती से पूरा करते हैं।

[2] इन सभी चीज़ों से निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से इंसान अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं और दीन को मज़ाक़ और हँसी का निशाना भी बनाते हैं।

७. और जब उस के सामने हमारी आयतों का पाठ (तिलावत) किया जाता है तो घमंड के साथ इस तरह मुंह फेर लेता है कि जैसे उस ने सुना ही नही, जैसे कि उस के दोनों कानों में डाट हैं।[1] आप उसे कठिन अज़ाब की ख़बर दीजिए।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ⑦

८. बेशक जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल कर लिया और काम भी नेक (सुन्नत के अनुसार) किया उन के लिए सुखों वाली जन्नत हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ⑧

९. जहाँ वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह का सच्चा वादा है, वह बड़ा महिमा (ग़ल्बा) वाला और पूरा हिक्मत वाला है।

خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑨

१०. उसी ने आकाशों को बिना खंभे (स्तम्भ) के बनाया है, तुम उन्हें देख रहे हो, और उस ने धरती पर पहाड़ों को डाल दिया ताकि वे तुम्हें कंपित (जुम्बिश) न कर सकें, और हर तरह के जानदार धरती में फैला दिये, और उस ने आकाश से बारिश करके धरती से हर तरह के सुन्दर जोड़े उपजा दिये।[2]

خَلَقَ السَّمَاوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۖ وَأَلْقَىٰ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَابَّةٍ ۚ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑩

११. यह है अल्लाह की सृष्टि (मख़लूक़) अब तुम मुझे इस के सिवाय दूसरे किसी की कोई सृष्टि तो दिखाओ (कुछ नहीं), यह ज़ालिम खुली गुमराही में हैं।

هَٰذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ⑪

---

[1] यह उस इंसान की हालत है जो ऊपर बयान किये गये खेलकूद के साधनों (वसायलों) में मग्न रहता है, वह क़ुरआन की आयतों (सूत्रों) और अल्लाह के रसूल की बातों को सुनकर बहरा बन जाता है, जबकि वह बहरा नहीं होता और इस तरह मुंह फेर लेता है जैसे उस ने सुना ही नहीं, क्योंकि उस के सुनने से वह तकलीफ़ महसूस करता है, इसलिए उसे इस से कोई फ़ायेदा नही होता।

[2] زوج यहाँ क़िस्म के मतलब में है, यानी हर तरह के अनाज और मेवे (फल) पैदा किये, इनका अच्छी सिफ़त, इन के रंग की ख़ूबसूरती और ज़्यादा फ़ायदे की तरफ़ इशारा करता है।

१२. और हम ने बेशक लुक़मान को हिक्मत दिया[1] कि तू अल्लाह (तआला) का शुक्रिया अदा कर, हर शुक्र करने वाला अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्रिया अदा करता है, जो भी नाशुक्री करे वह जान ले कि अल्लाह (तआला) बेनियाज़ तारीफ़ वाला है।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ⑫

१३. और जब लुक़मान ने नसीहत करते हुए अपने पुत्र से कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र! अल्लाह (तआला) के साथ साझीदार न बनाना, बेशक अल्लाह का साझीदार बनाना बहुत बड़ा ज़ुल्म है।

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ⑬

१४. हम ने इंसान को उस के माता-पिता के बारे में शिक्षा (तालीम) दी है[2] उसकी माता ने तकलीफ़ों पर तकलीफ़ उठाकर[3] उसे गर्भ में रखा और उसकी दूध छुड़ायी दो साल में है कि तू मेरी और अपने माता-पिता का शुक्रिया अदा कर, मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है।

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ⑭

---

[1] हज़रत लुक़मान अल्लाह के परहेज़गार बंदे थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने अक़्ल और हिक्मत और धार्मिक मुआमले में ऊँचा मुक़ाम अता किया था, उन से किसी ने पूछा कि तुम्हें यह इल्म और अक़्ल किस तरह हासिल हुआ, उन्होंने फ़रमाया: सीधे रास्ते पर रहने, ईमानदारी को अपनाने और बेकार बातों से बचने से और ख़ामोश रहने के सबब। यह ग़ुलाम थे, उन के मालिक ने कहा कि बकरी काट कर के उस के सब से अच्छे दो हिस्से लाओ, आख़िर में वह ज़ुबान और दिल निकालकर ले गये। एक दूसरे मौक़ा पर मालिक ने उन से कहा कि बकरी काट कर के उस के सब से बुरे दो हिस्से लाओ, वह फिर वही ज़ुबान और दिल लेकर चले गये, पूछने पर उन्होंने बताया कि ज़ुबान और दिल अगर ठीक हों तो यह सब से बेहतर हैं, और अगर बिगड़ जायें तो उन से बुरी कोई चीज़ नहीं। (इब्ने कसीर)

[2] तौहीद और अल्लाह की इबादत के साथ ही माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ज़ोर दिया गया है, इस से इस शिक्षा (तालीम) की अहमियत मालूम होती है।

[3] इसका मतलब यह है कि माता के गर्भ में बच्चा जिस तरह बढ़ता है, माँ पर बोझ बढ़ता जाता है, जिस से माँ कमज़ोर होती चली जाती है, माँ की इन तकलीफ़ों के बयान से उस तरफ़ भी इशारा मिलता है कि माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करते वक़्त माँ को प्राथमिकता (तरजीह) दी जाये जैसाकि हदीस में भी है।

وَإِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓى أَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿15﴾

१५. और अगर वे दोनों तुझ पर इस बात का दवाव डालें कि तू मेरे साथ साझीदार बना जिसका तुझे इल्म न हो तो तू उनका कहना न मानना, लेकिन दुनिया में उन के साथ भलाई से निर्वाह (वसर) करना और उस के रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ़ झुका हुआ हो। तुम्हारा सब का लौटना मेरी ही तरफ़ है, तुम जो कुछ करते हो उस से फिर मैं तुम्हें बाख़वर कर दूँगा।

يٰبُنَيَّ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمٰوٰتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللّٰهُ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿16﴾

१६. प्यारे बेटे! अगर कोई चीज राई के दाने के बराबर हो, फिर वह भी अगर किसी पत्थर के नीचे हो या आकाशों में हो या धरती में हो, उसे अल्लाह (तआला) जरूर लायेगा, अल्लाह (तआला) बड़ा बारीक देखने वाला और जानने वाला है।

يٰبُنَيَّ أَقِمِ الصَّلٰوةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا أَصَابَكَ ۚ إِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُوْرِ ﴿17﴾

१७. हे मेरे प्यारे बेटे! तू नमाज क़ायम रखना, अच्छे कामों के लिए हुक्म देना और बुरे कामों से रोकना, अगर तुम पर मुसीबत आये तो सब्र करना, (यक़ीन करो) कि यह बड़े ताकीदी कामों में से है।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿18﴾

१८. और लोगों के सामने अपने गाल न फुला,[1] और धरती पर अकड़ कर घमंड से न चल, किसी अहंकारी (तकब्बुर) घमंडी इंसान को अल्लाह (तआला) पसन्द नहीं करता।

---

[1] यानी घमंड न करो कि लोगों को तुच्छ (हक़ीर) समझो, और जब वे तुझ से बात करना चाहें तो तुम उन से मुँह फेर लो या वातचीत करते वक़्त उन से मुँह फेरे रखो। صعر एक रोग है, जो ऊँट के सिर या गर्दन में होता है, जिस से उसकी गर्दन मुड़ जाती है, यहाँ घमंड के रूप में मुँह फेर लेने के अर्थ (मायेना) में इस्तेमाल हुआ है।

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۗ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿19﴾

१९. और अपनी चाल में दरिमयानापन रख,[1] और अपनी आवाज़ धीमी रख,[2] बेशक बहुत बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿20﴾

२०. क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह (तआला) ने धरती और आकाश की हर चीज़ को हमारी सेवा में लगा रखा है और तुम्हें अपनी खुले और छिपे एहसान पूरे तौर पर कर रखी हैं, और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बिना इल्म, बिना हिदायत और बिना रौशन किताब के झगड़ा करते हैं।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ۗ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿21﴾

२१. और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की नाज़िल की हुई वह्यी (प्रकाशना) की पैरवी करो, तो कहते हैं कि हम ने तो जिस रास्ते पर अपने बुज़ुर्गों को पाया है उसी की इत्तेबा करेंगे, चाहे शैतान उन के बुज़ुर्गों को नरक के अज़ाब की तरफ़ बुलाता हो।

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿22﴾

२२. और जो इंसान अपने चेहरे को (ख़ुद को) अल्लाह के ताबे कर दे और वह है भी परहेज़गार, तो बेशक उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया, सभी अमल का नतीजा अल्लाह की तरफ़ है।

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۗ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿23﴾

२३. और काफ़िरों के कुफ़्र से आप दुखी न हों, आख़िर में उन सभी का लौटना हमारी तरफ़ ही है, उस समय उन के किये को हम उन्हें बता देंगे, बेशक अल्लाह दिलों कि भेदों (राज़) तक जानता है।

---

[1] यानी चाल इतनी धीमी न हो कि जैसे कोई रोगी हो और न इतनी तेज़ चाल से हो कि मान-सम्मान के ख़िलाफ़ हो।

[2] यानी चीख़-चिल्लाकर बात न कर, इसलिए कि अगर ऊँची आवाज़ में बात करना प्यारा होता तो गधे की आवाज़ सब से अच्छी समझी जाती, लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि गधे की आवाज़ सब से बुरी और घृणित (नापसंदीदा) है। इसलिए हदीस में आता है कि गधे की आवाज़ सुनों तो शैतान से पनाह माँगो (बुख़ारी, किताब बदयिल ख़लकि और मुस्लिम वग़ैरह)

२४. हम उन्हें कुछ यूँ ही फ़ायेदा पहुँचा देते हैं, लेकिन आख़िर हम उन्हें बहुत मजबूरी की हालत में सख़्त अज़ाब की तरफ़ हाँक ले जायेंगे।

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿24﴾

२५. और अगर आप उन से पूछें कि आकाश और धरती का पैदा करने वाला कौन है? तो ये ज़रूर जवाब देंगे अल्लाह, तो कह दीजिए कि सारी तारीफ़ों के लायक़ अल्लाह ही है, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग अंजान हैं।

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿25﴾

२६. आकाशों में और धरती में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है, बेशक अल्लाह (तआला) बड़ा बेनियाज और महिमा (हम्द) और तारीफ़ के लायक़ है।

لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ﴿26﴾

२७. और सारी धरती के पेड़ों की अगर क़लमें हो जायें और सारे समुद्रों की स्याही हो, और उन के बाद सात समुद्र दूसरे हों फिर भी अल्लाह की तारीफ़ ख़त्म नहीं हो सकती।[1] बेशक अल्लाह (तआला) प्रभावशाली और हिक्मत वाला है।

وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿27﴾

२८. तुम सब की पैदाइश और मरने के बाद ज़िन्दा करना ऐसा ही है, जैसे एक जान का, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

مَّا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿28﴾

---

[1] इस में अल्लाह तआला की तारीफ़, बड़ाई, जलाल, उस के सब से अच्छे नामों, सब से अच्छे गुणों (अवसाफ़) और उस के वे कलिमा जो उसकी तारीफ़ से आगाह कराते हैं उनका बयान हैं, वे इतने हैं कि किसी के लिए उनका घेरना या उनकी जानकारी या उन के असल और हक़ीक़त तक पहुँच पाना मुमकिन नही है। अगर कोई इसकी गिनती करना और लिखित तौर में लाना चाहे तो दुनिया के सभी पेड़ के कलम बना लिये जायें और सारे समुद्र के पानी की स्याही बनाकर लिखना चाहें और वे ख़त्म हो जायें, लेकिन अल्लाह के इल्म, उसकी तख़लीक़ और सिफ़त की ज़्यादती और उसकी अज़मत और जलाल के प्रतीकों (मज़ाहिर) की गिनती नहीं की जा सकती। सात समुद्र अतिश्योक्ति (ग़ुलू) के रूप में है, दायरे में लेने का मक़सद नही है, इसीलिए कि अल्लाह की आयतों और कलिमा को सीमित (महदूद) कर लेना मुमकिन ही नहीं है। (इब्ने कसीर) इस मायना की आयत सूर: कहफ़ के आख़िर में गुज़र चुकी है।

२९. या आप नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) रात को दिन में और दिन को रात में खपा देता है ।[1] सूरज और चाँद को उसी ने फ़रमाँबर्दार बना रखा है कि हर एक मुक़र्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक चलता रहे, अल्लाह (तआला) हर उस अमल को जो तुम करते हो जानता है ।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (29)

३०. यह सब (इन्तिज़ाम) इस सबब है कि अल्लाह (तआला) सच है और उस के सिवाय जिन-जिन को लोग पुकारते हैं सब झूठ (बातिल) हैं, और बेशक अल्लाह (तआला) बहुत आला (ऊँचा) और बहुत बड़ा है ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (30)

३१. क्या तुम इस पर ख़्याल नहीं करते कि पानी में नावें अल्लाह की नेमत से चल रही हैं, इसलिए कि वह तुम्हें अपने निशान दिखा दे, बेशक इस में हर सब्र करने वाले और शुक्रगुज़ार के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं ।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ (31)

३२. और जब उन पर धारायें उन छत्रों (साइबानों) की तरह छा जाती हैं, तो वे (बहुत) यक़ीन कर के अल्लाह (तआला) ही को पुकारते हैं और जब अल्लाह (तआला) उन्हें छुटकारा दिलाकर थल (ख़ुश्की) की तरफ़ पहुँचाता है, तो कुछ उन में से संतुलित (ऐतदाल पर) रहते हैं, और हमारी आयतों का इंकार वही करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले और नाशुक्रे हों ।

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ (32)

[1] यानी रात का कुछ भाग लेकर दिन में शामिल करता है, जिस से दिन बड़ा और रात छोटी हो जाती है, जैसे गर्मी के मौसम में होता है, फिर दिन का कुछ भाग लेकर रात में शामिल कर देता है जिस से दिन छोटे और रात बड़ी हो जाती है, जैसे सर्दी के मौसम में होता है ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمْ وَٱخْشَوْا۟ يَوْمًا لَّا يَجْزِى وَالِدٌ عَن وَلَدِهِۦ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازٍ عَن وَالِدِهِۦ شَيْـًٔا ۚ إِنَّ وَعْدَ ٱللَّهِ حَقٌّ ۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ ٱلْحَيَوٰةُ ٱلدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِٱللَّهِ ٱلْغَرُورُ ﴿33﴾

३३. लोगो! अपने रब का भय (डर) रखो और उस दिन का भय करो, जिस दिन पिता अपने पुत्र को कोई लाभ (फ़ायेदा) न पहुँचा सकेगा और न पुत्र अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा, याद रखो! अल्लाह का वादा सच्चा है, देखो! तुम्हें सांसारिक जीवन धोखे में न डाले और न धोखेबाज़ (शैतान) तुम्हें धोखे में डाल दे।

إِنَّ ٱللَّهَ عِندَهُۥ عِلْمُ ٱلسَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ ٱلْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌۢ بِأَىِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌۢ ﴿34﴾

३४. बेशक अल्लाह (तआला) ही के पास क़यामत का इल्म है, वही बारिश करता है और माँ के गर्भ में जो है उसे जानता है। कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या कुछ कमायेगा? न किसी को यह मालूम है कि किस धरती पर मरेगा।[1] याद रखो! अल्लाह (तआला) ही पूरे ज्ञान (इल्म) वाला और सच्चाई जानने वाला है।

---

[1] हदीस में आता है कि पाँच चीज़ें अप्रत्यक्ष (ग़ैब) की कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: लुक़मान और किताबुल इस्तिस्क़ा) (१) क़यामत के क़रीब होने की निशानी तो नबी ﷺ ने बयान किये हैं, लेकिन क़यामत के आने का निश्चित ज्ञान (यक़ीनी इल्म) अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं, किसी फ़रिश्ते को नहीं और किसी भेजे गये रसूल को नहीं। (२) बारिश का मसअला ऐसा ही है, निशानी और इशारे से अंदाज़ा तो लगाया जा सकता है लेकिन यह बात हर इंसान के अनुभव (तर्जुबा) और दर्शन में है कि यह अंदाज़े कभी सही होते हैं कभी ग़लत। यहाँ तक मौसम विभाग का एलान भी ठीक नहीं होता, जिस से मालूम होता है कि बारिश का भी निश्चित ज्ञान (इल्म) अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं। (३) माँ के गर्भ में मशीन के ज़रिये लिंग (जिन्स) का अधूरा अंदाज़ा तो शायद मुमकिन है कि लड़का है या लड़की? लेकिन माँ के गर्भ में पलने वाला यह बच्चा नसीब वाला है या बदनसीब और पूरा है या अधूरा, ख़ूबसूरत होगा या बद्सूरत, काला होगा या गोरा वग़ैरह बातों का इल्म अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं। (४) इंसान कल क्या करेगा? वे दीनी काम होगा या दुनियावी? किसी को आने वाले कल के बारे में इल्म नहीं है कि वह उस की ज़िन्दगी में आयेगा भी या नहीं? और अगर आया भी तो वह उस में क्या कुछ करेगा? (५) मौत कहाँ आयेगी? घर में या घर से बाहर, अपने देश में या परदेश में, जवानी में आयेगी या बुढ़ापे में, अपने दिल की तमन्ना (इच्छा) पूरी होने के बाद या पहले? किसी को इल्म नहीं।

सूरतुस्सज्दा-३२

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ

सूर: सज्दा* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीस आयतें और तीन रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰

الٓمّٓ ﴿1﴾

२. बेशक इस किताब का नाज़िल करना सारी दुनिया के रब की तरफ़ से है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿2﴾

३. क्या यह कहते हैं कि इस ने उसे गढ़ लिया है?[1] नहीं-नहीं, बल्कि यह तेरे रब की तरफ़ से सच है, ताकि आप उन्हें डरायें जिन के पास आप से पहले कोई डराने वाला नहीं[2] आया, मुमकिन (संभव) है कि वे सच्चे रास्ते पर आ जायें।

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿3﴾

---

* **सूर: अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सज्दा** : हदीस में आता है कि नबी ﷺ जुमे (शुक्रवार) के दिन फ़ज्र (भोर) की नमाज में अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सज्दा (और दूसरी रकअत में) सूर: दहर पढ़ा करते थे। (सहीह बुख़ारी और मुस्लिम किताबुल जुमा) उसी तरह यह भी सहीह सनद से साबित है कि नबी ﷺ रात को सोने से पहले सूर: अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ अस्सज्दा और सूर: मुल्क पढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी नं॰ ८९२ और मुसनद अहमद ३४०\३)

[1] यह फटकार के तौर पर है कि क्या सारी दुनिया के रब की उतारी हुई इस अहम किताब (ग्रन्थ) के बारे में कहते हैं कि इसे ख़ुद (मोहम्मद ﷺ) ने गढ़ लिया है।

[2] यह क़ुरआन के नाज़िल होने का सबब है, उस से भी मालूम हुआ (जैसाकि पहले भी बयान गुजर चुका है) कि अरबों में नबी ﷺ पहले नबी थे। कुछ लोगों ने हज़रत शुऐब को भी अरबों में भेजा हुआ माना है, इस बिना पर उम्मत से मुराद फिर ख़ास तौर से क़ुरैश होंगे जिनकी तरफ़ कोई नबी आप ﷺ से पहले नहीं आया।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ (4)

४. अल्लाह (तआला) वह है जिस ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन के बीच है सब कुछ छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर बुलन्द हुआ, तुम्हारे लिए उस के सिवाय कोई मदद करने वाला सिफ़ारिशी नहीं,[1] क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗۤ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ (5)

५. वह आकाश से धरती तक कामों का इंतेज़ाम करता है, फिर (वह काम) एक ऐसे दिन में उसकी तरफ़ चढ़ जाता है जिसका अंदाज़ा तुम्हारे हिसाब के एक हज़ार साल के बराबर है।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ (6)

६. यही है हाज़िर और ग़ैब का जानने वाला ज़बरदस्त ग़ालिब, बड़ा मेहरबान।

الَّذِيْۤ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ (7)

७. जिस ने बड़ी ख़ूबसूरत बनाई जो चीज़ भी बनायी और इंसान की पैदाईश मिट्टी से शुरू की।[2]

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ (8)

८. फिर उसका वंश एक तुच्छ (हक़ीर) पानी के निचोड़ से बनाया।[3]

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ (9)

९. जिसे ठीक-ठाक करके उस में अपना प्राण (रूह) फूंका, और उसी ने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये, (उस पर भी) तुम बहुत ही थोड़ा शुक्रिया करते हो।

---

[1] यानी वहाँ कोई ऐसा दोस्त नहीं होगा जो तुम्हारी मदद कर सके और तुम उस के ज़रिये अल्लाह के अज़ाब को टाल सको, न वहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला ही ऐसा होगा जो तुम्हारी सिफ़ारिश कर सके।

[2] यानी पहले इंसान आदम को मिट्टी से बनाया, जिन से इंसानों का आग़ाज़ हुआ और उनकी बीवी हज़रत हौवा को आदम की बायीं पसली से पैदा किया, जैसाकि हदीस से मालूम होता है।

[3] यानी वीर्य (मनी) की बूंद से। मतलब यह है कि एक इंसान का जोड़ा बनाने के बाद, उस के ख़ानदान के लिए यह तरीक़ा मुक़र्रर किया कि औरत-मर्द आपस में विवाह (शादी) करें, उन के मिलन से जो पानी की बूंद, स्त्री के गर्भाशय (रिहम) में जायेगी, उस से हम एक इंसान का जिस्म बनाकर बाहर भेजते रहेंगे।

१०. और उन्होंने कहा कि क्या हम जब धरती में खो जायेंगे क्या फिर नये जीवन में आ जायेंगे? बल्कि (बात यह है) कि उन लोगों को अपने रब के मिलन का यक़ीन ही नहीं।

وَقَالُوٓا ءَإِذَا ضَلَلْنَا فِى ٱلْأَرْضِ ءَإِنَّا لَفِى خَلْقٍ جَدِيدٍۭ ۚ بَلْ هُم بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كَـٰفِرُونَ ﴿10﴾

११. कह दीजिए ! कि तुम्हें मौत का फ़रिश्ता (यमदूत) मारेगा जो तुम पर तैनात किया गया है, फिर तुम सब अपने रब की तरफ़ लौटाये जाओगे।

قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ ٱلْمَوْتِ ٱلَّذِى وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿11﴾

१२. और काश कि आप देखते जब कि पापी लोग अपने रब के सामने सिर झुकाये हुए होंगे, कहेंगे कि हे हमारे रब! हम ने देख लिया और सुन लिया, अब तू हमें वापस लौटा दे तो नेकी के काम करेंगे, हम ईमान वाले हैं।

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا۟ رُءُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَٱرْجِعْنَا نَعْمَلْ صَـٰلِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿12﴾

१३. और अगर हम चाहते तो हर इंसान को हिदायत दे देते, लेकिन मेरी यह बात पूरी तरह सच हो चुकी है कि मैं जरूर जहन्नम को इंसानों और जिन्नों से भर दूंगा।

وَلَوْ شِئْنَا لَـَٔاتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَىٰهَا وَلَـٰكِنْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ مِنِّى لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿13﴾

१४. अब तुम अपने उस दिन के मिलन को भूल जाने का मज़ा चखो, हम ने भी तुम्हें भुला दिया, अपने किये हुए अमल के (बुरे नतीजे) से स्थाई यातना (मुस्तक़िल अज़ाब) का मज़ा लो।

فَذُوقُوا۟ بِمَا نَسِيتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَـٰذَآ إِنَّا نَسِينَـٰكُمْ ۖ وَذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿14﴾

१५. हमारी आयतों पर वही ईमान लाते है, जिन्हें जब कभी शिक्षा (नसीहत) दी जाती है तो सज्दे में गिर पड़ते हैं, और अपने रब की तारीफ़ के साथ उसकी महिमागान (तस्बीह) करते हैं और तकब्बुर से अलग रहते हैं।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِـَٔايَـٰتِنَا ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا۟ بِهَا خَرُّوا۟ سُجَّدًا وَسَبَّحُوا۟ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۩ ﴿15﴾

१६. उनकी करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं, अपने रब को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं,[1] और जो कुछ हम ने उन्हें दे

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ ٱلْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَـٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿16﴾

[1] यानी उसकी रहमत और नेमत के साथ उसके एहसान और इंआम की उम्मीद भी रखते हैं और

रखा है, वह ख़र्च करते हैं ।[1]

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿17﴾

१७. कोई प्राणी (नफ़्स) नहीं जानता जो कुछ हम ने उनकी आँखों की ठंडक उन के लिए छिपा रखी है,[2] जो कुछ करते थे यह उसका बदला है ।

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا ۚ لَّا يَسْتَوُۥنَ ﴿18﴾

१८. क्या वह जो ईमानवाला हो उसके बराबर है जो भ्रष्टाचारी (फ़ासिक़) हो?[3] ये बराबर नहीं हो सकते ।

أَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فَلَهُمْ جَنَّٰتُ ٱلْمَأْوَىٰ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿19﴾

१९. जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और नेकी के काम किये, उन के लिए दायमी जन्नत है, मेहमानी है, उन के अमल के बदले जो वह करते थे ।

وَأَمَّا ٱلَّذِينَ فَسَقُوا۟ فَمَأْوَىٰهُمُ ٱلنَّارُ ۖ كُلَّمَآ أَرَادُوٓا۟ أَن يَخْرُجُوا۟ مِنْهَآ أُعِيدُوا۟ فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّذِى كُنتُم بِهِۦ تُكَذِّبُونَ ﴿20﴾

२०.और लेकिन जिन्होंने हुक्म की नाफ़रमानी की उनका ठिकाना नरक है, जब कभी भी उस से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायेंगे, और कह दिया जायेगा कि अपने झुठलाने के बदले आग का मज़ा चखो ।

उस के ग़ज़ब और अज़ाब और पकड़ और सज़ा से डरते भी हैं, सिर्फ़ उम्मीद ही उम्मीद नहीं रखते हैं, कि अमल से बेफ़िक्र हो जायें (जैसाकि बे अमल और बेअमलों का काम है) और न अज़ाब का इतना डर ही रखते हैं कि उसकी रहमत और नेमत से मायूस हो जायें क्योंकि यह मायूसी भी कुफ़्र और गुमराही की सूचक (निशानी) है ।

[1] ख़र्च में ज़कात (आवश्यक दान) आम सदक़ा (सत्कार) नेकी दोनों शामिल हैं, ईमानवाले दोनों का अपनी ताक़त भर प्रयोजन (इस्तेमाल) करते हैं ।

[2] यानी उस को अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता, उन उपहारों (इंआमों) को जो उक्त ईमान वाले के लिए छिपा रखी हैं, जिन से उनकी आँखें ठंडी हो जायेंगी । इसकी तफ़सीर में नबी ﷺ ने यह हदीस क़ुदसी बयान की है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे चीज़ें तैयार कर रखी हैं जो किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी, न किसी इंसान के ध्यान में आयी । (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: सज्दा)

[3] यह प्रश्न नकारात्मक (मन्फ़ी) है, यानी अल्लाह के सामने ईमान वाले और काफ़िर बराबर नहीं हो सकते हैं, बल्कि उन के बीच बहुत फ़ासला और दूरी होगी, ईमान वाले अल्लाह के मेहमान होंगे और मान-सम्मान (इज़्ज़त-एहतेराम) के हक़दार होंगे ।

وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿21﴾

२१. और बेशक हम उन्हें क़रीब के छोटे से कुछ अज़ाबों को[1] उस बड़े अज़ाब के अलावा चखायेंगे ताकि वह लौट आयें।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿22﴾

२२. और उस से बढ़कर ज़ालिम कौन है जिसे अल्लाह की आयतों से भाषण (वाज़) दिया गया, फिर भी उस ने उन से मुख फेर लिया, निश्चय हम भी पापियों से बदला लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّن لِّقَائِهِ ۖ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿23﴾

२३. और हक़ीक़त में हम ने मूसा को किताब (ग्रन्थ) अता की, तो आप को कभी उस के मिलन में शक नहीं करनी चाहिए, और हम ने उसे इस्राईल की औलाद की हिदायत का ज़रिया बनाया।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿24﴾

२४. और हम ने उन में से, चूंकि उन लोगों ने सब्र किया, ऐसे अगुवा बनाये जो हमारे हुक्म से लोगों की हिदायत करते थे और हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे।[2]

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿25﴾

२५. बेशक आप का रब उन सब के बीच इन सारी बातों का फैसला क़यामत के दिन करेगा, जिन में वे इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।

---

[1] क़रीबी अज़ाब (निकट की कुछ यातनाओं) से दुनियावी अज़ाब या दुनियावी दुख और रोग वग़ैरह मुराद हैं, कुछ के क़रीब वे क़त्ल इस से मुराद हैं, जिस से बद्र के युद्ध में काफ़िर पीड़ित हुए, या वह सूखा है जो मक्कावासियों पर पड़ा था। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं ये सारी हालतें और परिस्थितियाँ (कवाएफ़) इस में शामिल हो सकती हैं।

[2] इस आयत से सब्र की अहमियत ज़ाहिर होती है, सब्र और तक़वा का मतलब है कि अल्लाह के हुक्म का पालन करने और पाप को छोड़ने में और अल्लाह के रसूलों की तसदीक़ और उन की पैरवी में जो कष्ट सहन करने पड़ें, उन्हें ख़ुशी से सहन करना। अल्लाह ने फ़रमाया: उन के सब्र करने और अल्लाह की आयतों पर यक़ीन करने के सबब हम ने उन्हें इमामत और प्रतिनिधित्व (पेशवाई) की जगह पर नियुक्त (मुतअय्यन) कर दिया, लेकिन जब उन्होंने उस के ख़िलाफ़ परिवर्तन (तहरीफ़) और संशोधन (तावील) का काम शुरू कर दिया तो उन से यह पद छीन लिये गये। इसलिए उस के बाद उन के दिल कड़े हो गये, फिर न उनका अमल सदाचारी (तक़वा वाला) रहा न उनका ईमान ठीक।

२६. क्या इस बात ने भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान (हिदायत) न किया कि हम ने उन से पहले के बहुत सी जमाअतों को हलाक कर दिया, जिन के आवासों में ये चल फिर रहे हैं। उस में तो बड़ी-बड़ी नसीहतें हैं, क्या फिर भी यह नहीं सुनते।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ (26)

२७. क्या यह नहीं देखते कि हम पानी को उसर (निर्जन) धरती की तरफ़ बहाकर ले जाते हैं, फिर उस से हम खेतियाँ उपजाते हैं जिसे उन के जानवर और वे ख़ुद खाते हैं,[1] क्या फिर भी यह नहीं देखते?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ (27)

२८. और कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा? अगर तुम सच्चे हो तो बतलाओ?[2]

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ (28)

२९. जवाब दे दो कि फ़ैसले के दिन ईमान लाना बेईमानों को कुछ काम न आयेगा और न उन्हें ढील दी जायेगी।[3]

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ (29)

३०. अब आप इनका ख़्याल भी छोड़ दीजिए और इंतेज़ार में रहें यह भी इंतेज़ार कर रहे हैं।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ (30)

---

[1] पानी से मुराद आकाशीय बारिश और श्रोतों (चश्मों), नालों और घाटियों का पानी है, जिसे अल्लाह तआला बंजर और बेजान जगह की तरफ़ बहाकर ले जाता है और उस से पैदावार होती है जो इंसान खाता है, और जो भूसा और चारा होता है वह जानवर खा लेते हैं। इस से मुराद कोई ख़ास इलाक़ा और ज़मीन नहीं है, बल्कि आम है जो हर बेजान, बंजर समतल ज़मीन को शामिल करता है।

[2] इस फ़ैसले (विजय) से मुराद अल्लाह तआला का वह अज़ाब है जो मक्का के काफ़िर नबी ﷺ से माँगा करते थे और कहा करते थे कि ऐ मोहम्मद (ﷺ) तेरे अल्लाह की मदद तेरे लिए कब आयेगी, जिस से तू हमें डराता रहता है? अभी तो हम यही देख रहे हैं कि तुझ पर ईमान लाने वाले छुपे फिरते हैं।

[3] इस फ़ैसले के दिन से मुराद आख़िरत के फ़ैसले का दिन है, जहाँ ईमान क़ुबूल किया जायेगा और न मौक़ा दिया जायेगा, मक्का फ़त्ह का दिन नहीं है, क्योंकि उस दिन طلقاء का इस्लाम क़ुबूल कर लिया गया था जिनकी तादाद लगभग दो हज़ार थी। (इब्ने कसीर)

सूरतुल अहज़ाब-३३

سُوْرَةُ الْأَحْزَابِ

सूर: अहज़ाब मदीने में नाज़िल हुई और इस में तिहत्तर आयतें और नौ रूकुऊ हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿1﴾

१. हे नबी! अल्लाह तआला से डरते रहना और काफ़िर और मुनाफ़िक़ों की बातों में न आ जाना, अल्लाह तआला बहुत इल्म वाला बहुत हिक्मत वाला है।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿2﴾

२. और जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से वह्यी (प्रकाशना) की जाती है[1] उसकी इत्तेबा करें (यक़ीन करो) कि अल्लाह तुम्हारे हर अमल से वाक़िफ़ है।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿3﴾

३. और आप अल्लाह ही पर भरोसा रखें अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓئِيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ﴿4﴾

४. किसी इंसान के सीने में अल्लाह ने दो दिल नहीं रखे, और अपनी जिन बीवियों को तुम माता कह बैठते हो उन्हें अल्लाह ने तुम्हारी (सचमुच) मातायें नहीं बनाया और न तुम्हारे गोद लिये हुए बालकों को (हक़ीक़त में) तुम्हारे पुत्र बनाये हैं। यह तो तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं,[2] अल्लाह (तआला) सच बात कहता है[3]

---

[1] यानी क़ुरआन की और हदीसों की भी, इसलिए कि हदीसों के शब्द यद्यपि (अगरचे) नबी ﷺ के पाक मुंह से निकले हुए हैं, लेकिन उसका मतलब और तफ़सीर अल्लाह की तरफ़ से ही हैं, इसीलिए उनको गुप्त प्रकाशना (वह्यी ग़ैर मतलू) या पाठ न की जाने वाली (अपाठ्य) वह्यी कहा जाता है।

[2] यानी किसी को मां कह देने से वह मां नहीं बन जायेगी, न पुत्र कहने से पुत्र बन जायेगा, यानी उन पर मां और बेटे का धार्मिक विधान (शरई क़ानून) लागू नहीं होंगे।

[3] इसलिए उसकी पैरवी करो और मुंह बोली औरत को मां और गोद लिए बच्चे को पुत्र न कहो, ध्यान रहे कि किसी को प्यार-मोहब्बत में पुत्र कहना अलग बात है और गोद लिये बच्चे को हक़ीक़ी बेटा मान कर बेटा कहना दूसरी बात है, पहली बात मान्य है, यहां मक़सद दूसरी बात का हराम करना है।

और वही (सीधी) राह सुझाता है।

ادْعُوهُمْ لِآبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ ۚ فَإِن لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُم بِهِ وَلَٰكِن مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ⑤

५. गोद लिए बच्चों को उन के (हक़ीक़ी) पिताओं की तरफ़ मंसूब करके बुलाओ, अल्लाह के क़रीब पूरा इंसाफ़ यही है,[1] फिर अगर तुम्हें उन के (हक़ीक़ी) पिता का इल्म ही न हो तो वे तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं। तुम से भूल चूक से जो कुछ हो जाये उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, लेकिन गुनाह वह है जिसका तुम इरादा करो और इरादा दिल से करो। अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۗ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَن تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُم مَّعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ⑥

६. पैग़म्बर ईमानवालों पर ख़ुद उन से भी ज़्यादा हक़ रखने वाले हैं,[2] और पैग़म्बर की बीवियाँ ईमानवालों की मातायें हैं[3] और रिश्तेदार अल्लाह की किताब के आधार पर दूसरे ईमानवालों और मुहाजिरों के मुक़ाबले ज़्यादा हक़दार हैं। (हाँ) तुम्हें अपने दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करने की इजाज़त है। यह हुक्म 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ है।

---

[1] इस हुक्म से उस रीति को हराम कर दिया गया जो जाहिलियत से चली आ रही थी और इस्लाम के शुरूआती दौर में मौजूद थी कि गोद लिये हुए बच्चे को हक़ीक़ी बेटा समझा जाता था। सहाबा केराम का क़ौल है कि हम ज़ैद बिन हारिसा को जिन्हें रसूल अल्लाह ﷺ ने आज़ाद करके पुत्र बना लिया था। ज़ैद बिन मोहम्मद कहकर पुकारा करते थे, यहाँ तक कि क़ुरआन की आयत ادعوهم لآبائهم नाज़िल हो गयी।

[2] नबी ﷺ अपनी उम्मत के जितने ख़ैरख़्वाह और भलाई चाहने वाले थे, स्पष्टीकरण (वज़ाहत) की ज़रूरत नहीं। अल्लाह तआला ने आप ﷺ की इस मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही को देखकर इस आयत में आप (ﷺ) को ईमानवालों को अपनी जानों से भी ज़्यादा मुहब्बत करने लायक़ और आप ﷺ की मुहब्बत दूसरी सभी मुहब्बत से बड़ी और आप का हुक्म अपनी सभी इच्छाओं से बेहतर बताया है, इसलिए मुसलमानों के लिए ज़रूरी है कि आप ﷺ जिस माल की माँग अल्लाह के लिए करें, वह आप ﷺ पर निछावर कर दें, चाहे उन्हें ख़ुद कितनी ही ज़रूरत हो, आप ﷺ को अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करें। (जैसे हज़रत उमर का वाक़ेआ है)

[3] यानी इज़्ज़तो एहतेराम के करने में और उन से विवाह (शादी) न करने में मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों की मातायें भी हैं।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّنَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿7﴾

७. और जबकि हम ने सभी नबियों से अहद लिया (ख़ास तौर से) आप से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरियम के बेटे ईसा से और हम ने उन से वादा भी पक्का और मज़बूत लिया ।[1]

لِيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿8﴾

८. ताकि अल्लाह तआला सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे, और न मानने वालों के लिए हम ने दुखद सज़ायें तैयार कर रखी हैं ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿9﴾

९. हे ईमानवालो! अल्लाह तआला ने जो उपकार तुम पर किया, उसे याद करो जबकि तुम्हारा सामना करने के लिए सेनाओं पर सेनायें आयीं फिर हम ने उन पर तेज़ गति वाली आंधी और ऐसी सेना भेजी जिन्हें तुम ने देखा ही नहीं,[2] और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) सबको देखता है ।

إِذْ جَاءُوكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ﴿10﴾

१०. जबकि (दुश्मन) तुम्हारे ऊपर से और नीचे से आ गये[3] और जबकि आंखें पथरा गयीं और कलेजा मुंह को आने लगा, और तुम अल्लाह के बारे में मुख़्तलिफ़ विचार करने लगे ।[4]

---

[1] इस वादे से क्या मुराद है? कुछ के क़रीब यह वह वादे है जो एक-दूसरे की मदद और तसदीक़ का रसूलों से लिया गया था, जैसाकि सूर: आले इमरान की आयत नं॰ ८१ में है । कुछ के नज़दीक यह वह वादा है जिसका बयान सूर: शूरा की आयत नं॰ १३ में है कि दीन को क़ायम करना और उस में भेद (इख़्तिलाफ़) न डालना, यह वादा अगरचे सभी नबियों से लिया गया था, लेकिन यहाँ पर ख़ास तौर से पाँच रसूलों का नाम है, जिन से उन की अहमियत और फ़ज़ीलत का अंदाज़ा होता है और उन में भी नबी ﷺ का बयान सब से पहले है, जबकि रसूलों के बिना पर आप ﷺ आख़िरी हैं, इस से आप ﷺ की इज़्ज़त और एहतेराम की जिस तरह वज़ाहत हो रही है, उसकी व्याख्या (तफ़सील) करने की ज़रूरत नहीं है ।

[2] इस आयत में अहज़ाब की लड़ाई की मुख़्तसर जानकारी है जो ५ हिजरी में वाक़ेअ हुई, इसे अहज़ाब इसलिए कहते हैं कि इस मौक़ा पर सभी इस्लाम के दुश्मन इकट्ठा होकर मुसलमानों के केन्द्र मदीने पर हमला करने के लिए आये । अहज़ाब अरबी ज़ुबान में हिज़ब (गिरोह) का बहुवचन है, इसे ख़न्दक़ की जंग भी कहते हैं, इसलिए कि मुसलमानों ने मदीने के बचाओ के लिए मदीने की तरफ़ ख़न्दक़ (खाई) खोद दी थी, ताकि दुश्मन मदीने के अन्दर न आ सकें ।

[3] इस से मुराद यह है कि हर तरफ़ से दुश्मन आ गये या ऊपर से मुराद ग़त्फ़ान हवाज़िन और दूसरे नज्द के मूर्तिपूजक हैं और नीचे के तरफ़ से क़ुरैश और उन के साथी और सहयोगी ।

[4] यह मुसलमानों की उस हालत का बयान है जिस से वे उस वक़्त परेशान थे ।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا ﴿11﴾

११. यहीं ईमानवालों का इम्तेहान लिया गया और पूरी तरह से वे झिंझोड़ दिये गये।

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ﴿12﴾

१२. और उस वक़्त द्वयवादी (मुनाफ़िक़) और रोगी दिल वाले कहने लगे कि अल्लाह (तआला) और उस के रसूल ने हम से सिर्फ़ छल और कपट के ही वादे किये थे।

وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۚ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۛ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِنْ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ﴿13﴾

१३. और उन ही के एक गुट ने आवाज़ लगायी कि हे यथरिब वालो ![1] तुम्हारे ठहरने का (यह) मुक़ाम नहीं चलो लौट चलो, और उनका एक दूसरा गुट यह इजाज़त नबी से माँगने लगा कि हमारे घर ख़ाली और असुरक्षित (ग़ैर महफ़ूज़) हैं। हक़ीक़त में वे (खुले हुए) असुरक्षित न थे, (लेकिन) उनका मज़बूत इरादा भाग खड़े होने का हो चुका था।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا إِلَّا يَسِيرًا ﴿14﴾

१४. और अगर मदीने के चारों तरफ़ से उन पर (सेनायें) दाख़िल करायी जातीं, फिर उन से फ़साद की माँग की जाती तो ये ज़रूर फ़साद मचा देते और कुछ लड़ते भी तो थोड़ी सी।

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهَدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّونَ الْأَدْبَارَ ۚ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ﴿15﴾

१५. और इस से पहले तो उन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह (तआला) से किये गये वादे की पूछताछ ज़रूर है।

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَا تُمَتَّعُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿16﴾

१६. कह दीजिए कि अगर तुम मौत या क़त्ल के डर से भागो तो यह भागना तुम्हें कुछ काम न आयेगा, और उस वक़्त तुम बहुत कम लाभान्वित (फ़ायदेमंद) किये जाओगे।

[1] यथरिब उस पूरे इलाक़े का नाम था, मदीना उसी का एक हिस्सा था, जिसे यहाँ यथरिब का नाम दिया गया है। कहा जाता है कि इसका नाम यथरिब इसलिए पड़ा कि किसी वक़्त अमालिका में से किसी ने यहाँ पड़ाव डाला था जिसका नाम यथरिब बिन अमील था। (फ़तहुल क़दीर)

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوٓءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا (17)

१७. पूछिये तो कि अगर अल्लाह (तआला) तुम्हें कोई बुराई पहुँचाना चाहे या तुम पर कोई रहमत (कृपा) करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें बचा सके (या तुम से रोक सके)? अपने लिए अल्लाह (तआला) के सिवाय न कोई वली पायेगा न मदद करने वाला।

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۖ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا (18)

१८. अल्लाह (तआला) तुम में से (अच्छी तरह) जानता है जो दूसरों को रोकते हैं और अपने भाई-बन्धुओं से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और कभी-कभी ही लड़ाई में आ जाते हैं।

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا (19)

१९. तुम्हारी मदद में (पूरे) कंजूस हैं, फिर जब डर, भय का मौक़ा आ जाये तो आप उन्हें देखेंगे कि वह आप की तरफ़ नज़र जमा देते हैं और उन की आँखें इस तरह घूमती हैं, जैसे उस इंसान की जिस पर मौत की बेहोशी हो। फिर जब डर जाता रहता है तो तुम पर अपनी तेज़ ज़बान से बड़ी बातें बनाते हैं। माल के बड़े लालची हैं, यह लोग ईमान लाये ही नहीं हैं।[1] अल्लाह (तआला) ने उन के सारे अमल बेकार कर दिये हैं,[2] और अल्लाह (तआला) पर यह बड़ा आसान है।

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قَاتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا (20)

२०. समझते हैं कि अब तक सेनायें चली नहीं गयीं और अगर सेनायें आ जायें तो ये तमन्ना करते हैं कि काश कि वह बनवासियों में बंजारों के साथ होते कि तुम्हारी ख़बर लेते रहते,[3] अगर वे तुम में मौजूद होते (तब भी क्या)? यूँ ही बात

---

[1] यानी दिल से बल्कि ये फ़सादी हैं, क्योंकि उनके दिल कुफ़्र और बैर से भरे हुए हैं।

[2] इसलिए कि वे मूर्तिपूजक और नास्तिक (बेदीन) ही हैं, और नास्तिक और मूर्तिपूजक के अमल बेकार हैं, जिन पर कोई बदला या नेकी नहीं।

[3] यानी अगर मान भी लिया कि अगर वे काफ़िरों के गिरोह दोबारा लड़ाई के इरादे से वापस आ जायें तो फ़सादियों की इच्छा यही होगी कि वे मदीना नगर में आने के बजाय, बाहर रेगिस्तान में बद्दुओं के साथ हों और वहाँ लोगों से तुम्हारे बारे में पूछते रहें कि मोहम्मद (ﷺ) और उसके साथी नाश हुए या नहीं? या काफ़िरों की सेना कामयाब रही या नाकाम।

रखने के लिए तनिक लड़ लेते ।[1]

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ﴿21﴾

२१. यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में अच्छा नमूना है ।[2] हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह (तआला) की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करता है ।[3]

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ﴿22﴾

२२. और जब ईमानवालों ने (काफ़िरों की) सेनाओं को देखा तो (अचानक) कह उठे कि इन्हीं का वादा हमें अल्लाह ने और उस के रसूल ने दिया था और अल्लाह (तआला) और उस के रसूल सच्चे हैं, और उस (चीज़) ने उन के ईमान में और इताअत में और भी बढ़ोत्तरी कर दी ।

---

[1] सिर्फ़ अपमान के डर से या स्वदेशी (हमवतनी) के हक़ की वजह से, इस में उन लोगों के लिए घोर (सख़्त) चेतावनी है जो जिहाद से पीठ मोड़ते हैं या उस से पीछे हटते रहते हैं ।

[2] यानी हे मुसलमानों और मुनाफ़िक़ो! तुम सब के लिए रसूल अल्लाह ﷺ में नामूना है तो तुम जिहाद में और सब्र और तक़्वा में उसकी पैरवी करो । हमारा रसूल जिहाद के वक़्त भूखा रहा यहाँ तक कि पेट पर पत्थर बाँधने पड़े, उसका मुँह ज़ख़्मी हो गया उसका दाँत टूट गया, ख़ंदक अपने हाथों से खोदी और लगभग एक महीने दुश्मन के सामने डटा रहा । यह आयत अगरचे अहज़ाब की लड़ाई के बारे में नाज़िल हुई है, जिस में लड़ाई के मौक़े पर ख़ास तौर से रसूलुल्लाह ﷺ की सीरत को सामने रखने और पैरवी करने का हुक्म दिया गया है । लेकिन यह हुक्म आम है यानी आप ﷺ की सारी कथनी, करनी हर हालत में मुसलमानों के लिए पैरवी फ़र्ज़ है चाहे उसका सम्बन्ध इबादत से हो या सामाजिक, अर्थव्यवस्था (मआशियत) से या राजनीति (सियासी) से, ज़िन्दगी के हर मोड़ में आप ﷺ की हिदायत की पैरवी फ़र्ज़ है ।

[3] इस से यह वाज़ेह हो गया कि रसूल के इख़लाक़ की पैरवी वही करेगा जो आख़िरत में अल्लाह के मिलन पर ईमान रखता और बहुत ज़्यादा अल्लाह का बयान और ज़िक्र करता है । आज मुसलमान भी आम तौर से इन दोनों गुणों (अवसाफ़) से वंचित (महरूम) हैं, इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ के अख़लाक़ की भी कोई अहमियत उनके दिलों में नहीं है, उन में जो धार्मिक (दीनी) लोग हैं उन के नेता, मुखिया, गुरू और आलिम हैं और जो दुनियावी लोग और राजनैतिक (सियासी) लोग हैं उन के गुरू और नेता पश्चिमी देश के स्वामी हैं । रसूल अल्लाह ﷺ से मुहब्बत के मौखिक (ज़ुबानी) दावे बड़े हैं, लेकिन आप ﷺ को मुखिया और गुरू मानने के लिए उन में से कोई तैयार नहीं है ।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿23﴾

२३. ईमानवालों में (ऐसे) लोग भी हैं जिन्होंने जो अहद अल्लाह (तआला) से की थी, उन्हें सच्चा कर दिखाया,[1] कुछ ने तो अपना वादा पूरा कर दिया[2] और कुछ (मौक़ा की) इंतेज़ार में हैं और उन्होंने कोई बदलाव नहीं किया।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿24﴾

२४. ताकि अल्लाह (तआला) सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे दे और अगर चाहे तो मुनाफ़िक़ों को सज़ा दे या उन की भी तौबा क़ुबूल करे, अल्लाह (तआला) बड़ा क्षमाशील (बख़्शने वाला) और बड़ा रहम करने वाला है।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿25﴾

२५. और अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों को ग़ुस्से में भरे हुए ही (नाकाम) लौटा दिया कि उनकी कोई कामना (तमन्ना) पूरी न हुई।[3] और उस लड़ाई में अल्लाह (तआला) ख़ुद ही ईमानवालों को काफ़ी हो गया। अल्लाह (तआला) बड़ा ताक़तवर और ग़ालिब है।

وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿26﴾

२६. और जिन अहले किताब ने उन के साथ साँठ-गाँठ कर ली थी उन्हें (भी) अल्लाह तआला ने क़िलों से निकाल दिया और उन के दिलों में (भी) डर डाल दिया कि तुम उन के एक गुट को क़त्ल कर रहे हो और एक गुट को बंदी बना रहे हो।

---

[1] यह आयत उन कुछ सहाबा के बारे में नाज़िल हुई है, जिन्होंने इस मौक़े पर अपनी जानों की क़ुर्बानी देने के अजीब और आश्चर्यजनक (ताज्जुब ख़ेज़) करतब दिखाये थे और उन्हीं में वे सहाबा भी शामिल थे जो बद्र की लड़ाई में शामिल न हो सके थे, लेकिन उन्होंने यह प्रतिज्ञा (अहद) कर रखी थी कि अगर अब दोबारा कोई मौक़ा आया तो जिहाद में भरपूर हिस्सा लेंगे, जैसे नज़र बिन अनस वग़ैरह जो आख़िर में लड़ते हुए ओहद की लड़ाई में शहीद हुए, उन के शरीर पर तलवार, भाले और तीरों के ८० से ऊपर घाव थे, शहादत के बाद उनकी बहन ने उन्हें उनकी ऊँगली के पोर से पहचाना (मुसनद अहमद, हिस्सा ४, पेज नं॰ १९३)

[2] نَحْب का मतलब वादा, मनौती (मन्नत) और मौत किये गये हैं। मतलब यह है कि उन नेक लोगों में से कुछ अपना वादा या मन्नत पूरी करते हुए शहीद हो गये।

[3] यानी मूर्तिपूजक जो कई इलाक़े से जमा होकर आये थे ताकि मुसलमानों का वजूद ही ख़त्म कर दें। अल्लाह ने उन्हें अपने ग़ज़ब और बुरे इरादे के साथ वापस लौटा दिया न तो दुनियावी धन दौलत उन के हाथ लगी और न आख़िरत में बदला या नेकी हासिल करने के हक़्दार होंगे, किसी भी तरह की नेकी उन्हें हासिल न होगी।

२७. और उस[1] ने तुम्हें उनकी भूमि का और उन के घरों का और धन-सम्पत्ति का मालिक बना दिया[1] और उस भूमि का भी जिस पर तुम्हारे पग ही नहीं गये,[2] अल्लाह तआला सब कुछ कर सकने की क़ुदरत रखता है।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرًا ﴿27﴾

२८. हे नबी! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम्हारी इच्छा दुनियावी ज़िन्दगी और दुनियावी ज़ीनत की है, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला दूँ और तुम्हें अच्छाई के साथ छोड़ दूँ।

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ قُل لِّأَزْوَٰجِكَ إِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ ٱلْحَيَوٰةَ ٱلدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ﴿28﴾

२९. और अगर तुम्हारी इच्छा अल्लाह और उसका रसूल और आख़िरत का घर है तो (यक़ीन करो कि) तुम में से नेकी का काम करने वालियों के लिए अल्लाह (तआला) ने बड़ा अच्छा बदला रख छोड़ा है।[3]

وَإِن كُنتُنَّ تُرِدْنَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَٱلدَّارَ ٱلْـَٔاخِرَةَ فَإِنَّ ٱللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَـٰتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿29﴾

३०. हे नबी की बीवियो! तुम में से जो भी खुली बेहयाई करेगी उसे दुगुना अज़ाब दिया जायेगा,[4] अल्लाह तआला के क़रीब यह बड़ी आसान बात है।

يَـٰنِسَآءَ ٱلنَّبِىِّ مَن يَأْتِ مِنكُنَّ بِفَـٰحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُضَـٰعَفْ لَهَا ٱلْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرًا ﴿30﴾

---

[1] इस में बनी क़ुरैज़ा की लड़ाई का बयान है।

[2] कुछ ने इस से ख़ैबर की ज़मीन मुराद लिया है, क्योंकि उसके बाद ही हुदैबिया सुलह के बाद मुसलमानों ने ख़ैबर पर फ़त्ह हासिल की है, कुछ ने कहा कि मक्का की ज़मीन है और कुछ ने फ़ारस और रोम की ज़मीन को इसका मतलब बताया है और कुछ ने उन सारी धरती को बताया जो मुसलमान क़यामत तक फ़त्ह के ज़रिये हासिल करेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[3] फ़त्ह हासिल होने के नतीजे में जब मुसलमानों की हालत पहले के मुक़ाबिले कुछ सुधर गयी थी तो अंसार और मुहाजिरों की महिलाओं को देखकर पाक पत्नियों ने भी अपने घरेलू ख़र्च को बढ़ाने की माँग की। चूँकि नबी ﷺ सादगी वाले थे, इसीलिए पाक पत्नियों की इस माँग पर बहुत दुखी हुए और पत्नियों से अलग रहने लगे, जो एक महीने तक लगातार रहा आख़िर में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की। इसके बाद आप ने सब से पहले हज़रत आयेशा को यह आयत सुनाकर उन्हें हक़ दिया फिर भी उन्हें कहा कि ख़ुद फ़ैसले करने के बजाय अपने माता-पिता से राय के बाद ही कोई फ़ैसला लेना। हज़रत आयेशा ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि मैं आप के बारे में मश्विरा करूँ, बल्कि मैंने अल्लाह और रसूल ﷺ को छोड़ कर दुनियावी सुख-सुविधा को तरजीह नहीं दिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरः अहज़ाब)

[4] क़ुरआन में الفاحشة को व्याभिचार (बदकारी) के अर्थ (मायना) में इस्तेमाल किया गया है लेकिन فاحشة को बुराई के लिए, यहाँ इसका मतलब बुराई और बुरा सुलूक के हैं।